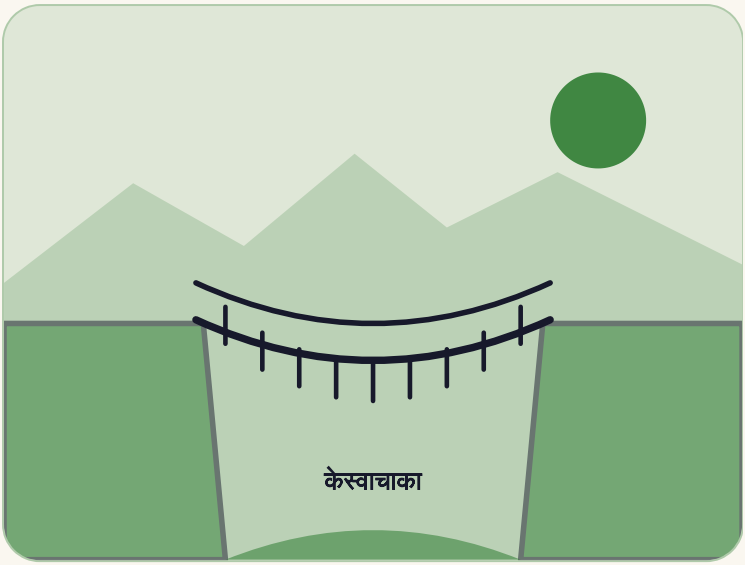

पेरू

घास से बना पुल

हर जून, एंडीज़ के चार समुदाय एक खड्ड के ऊपर घास का नया पुल बुनते हैं, जैसा लोग सदियों से करते आए हैं।

कहाँ केस्वाचाका, कनास प्रांत, कुस्को

कौन क्वेचुआ भाषी चार समुदाय, जो हर साल केस्वाचाका का रस्सी का पुल फिर बनाते हैं

कब इंका काल से आज तक

4 मिनट में पढ़ें

पहला अध्याय

कहानी

पेरू के एंडीज़ पर्वतों में ऊँचाई पर एक पुल खड्ड के ऊपर लटका है। खड्ड एक संकरी घाटी होती है जिसकी ढलानें खड़ी होती हैं। अपुरीमैक नदी बहुत नीचे बहती है। पुल घास से बना है।

इसका नाम केस्वाचाका है। कई स्रोत इसे इंका लोगों का आख़िरी रस्सी का पुल कहते हैं। इंका लोगों ने सैकड़ों साल पहले ऐसे कई पुल बनाए थे। ज़्यादातर अब नहीं रहे। यह पुल इसलिए बचा है क्योंकि लोग इसे हर साल फिर बुनते हैं।

रस्सी पर रस्सी

क्वेचुआ भाषी चार समुदाय मिलकर यह काम करते हैं। उनके नाम हैं हुइंचिरी, चौपिबांडा, चोक्कायुआ और कोलाना केहुए। मई के आख़िर में परिवार शुरू करते हैं। वे पहाड़ की एक सख़्त घास काटते हैं, उसे भिगोते हैं और पत्थरों से कूटते हैं। फिर उसे बटकर पतली रस्सियाँ बनाते हैं।

ज़्यादातर रस्सी औरतें और बच्चे बनाते हैं। पतली रस्सियों को बटकर मोटी रस्सियाँ बनाई जाती हैं। इन्हें गूँथकर छह बड़े रस्से बनते हैं। आदमी भारी रस्से खड्ड तक ढोकर ले जाते हैं।

> आज आप जीती-जागती संस्कृति को अपने सामने देख सकते हैं, जो 500 साल पीछे तक जाती है।
>
> जोसे बारेंइरो, स्मिथसोनियन के, National Geographic में उद्धृत

4
समुदाय मिलकर बनाते हैं

3
नया पुल बुनने में दिन

2013
जिस साल यूनेस्को ने इस परंपरा को सूची में डाला

खड्ड के ऊपर तीन दिन

जून में काम खड्ड पर पहुँच जाता है। पुराना पुल काटकर छोड़ दिया जाता है। वह नदी में गिर जाता है। कारीगर नए रस्सों को दोनों तरफ़ के पुराने पत्थर के खंभों से बाँधते हैं। फिर दो दल बुनते हैं, हर तरफ़ से एक। वे बिना सुरक्षा-पट्टों के काम करते हैं।

काम तब पूरा होता है जब दोनों दल बीच में मिलते हैं। लोग चिल्लाते हैं “हाइली केस्वाचाका!” फिर जश्न शुरू होता है। स्थानीय रिवाज के मुताबिक़ पुल बनाने के लिए सिर्फ़ आदमी नीचे उतरते हैं।

यह हुनर माँ-बाप से बच्चों को मिलता है। कुछ निवासी मानते हैं कि अगर वे नया पुल बनाना छोड़ देंगे, तो मौसम बिगड़ेगा। वे कहते हैं कि जिन सालों में यह नहीं हुआ, उनके बाद ओले और सूखा आए।

2013 में संयुक्त राष्ट्र की संस्कृति संस्था यूनेस्को ने इस परंपरा को अपनी जीवित विरासत की सूची में जोड़ा। अब सैलानी इसे देखने आते हैं, और उनका पैसा समुदायों के काम आता है। अगले जून वे फिर यही सब करेंगे।

कब क्या हुआ

- **इंका** इंका कारीगर रस्सी के पुलों से अपने साम्राज्य को जोड़ते हैं।
- **मई** परिवार घास काटकर रस्सी बटना शुरू करते हैं।
- **जून** पुराना पुल काट दिया जाता है। तीन दिन में नया बुना जाता है।
- **2013** यूनेस्को इस परंपरा को सूची में डालता है।

दूसरा अध्याय

यह कहानी ख़ास क्यों है

यह पुल म्यूज़ियम की चीज़ नहीं है। इसे हर साल फिर बनाना पड़ता है, इसलिए हुनर हर साल आगे सौंपना पड़ता है।

इसका कोई एक हीरो नहीं है। कई आम लोग हैं, और हर कोई एक छोटा हिस्सा निभाता है। पुल इसीलिए खड़ा रहता है।

हमारी राय

इस पुल को कोई मशीन या कोई अकेला नेता नहीं थामे है। लोग थामे हैं, हर साल साथ आकर।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1 काम बाँटिए

चार समुदाय रस्सियाँ, हाथ और समय देते हैं। *National Geographic* के मुताबिक़ वे बिना मज़दूरी के साथ काम करते हैं।

यह आज़माएँ: इस हफ़्ते दो-तीन लोगों से कहिए कि एक काम में आपके साथ हाथ बँटाएँ।

2 हुनर आगे सौंपिए

बुनाई परिवारों के भीतर सिखाई जाती है, यूनेस्को के मुताबिक़।

यह आज़माएँ: किसी छोटे को एक हुनर सिखाइए, या किसी बुज़ुर्ग से एक सीखिए।

3 छोटे धागों से बनाइए

पतली रस्सियाँ मोटी रस्सियाँ बनती हैं, फिर छह बड़े रस्से।

यह आज़माएँ: एक बड़े लक्ष्य को तीन छोटे धागों में बाँटिए। आज पहला शुरू कीजिए।

4 रख-रखाव को रिवाज बनाइए

हर जून वे पुल नया करते हैं। वे उसके गिरने का इंतज़ार नहीं करते।

यह आज़माएँ: हर महीने एक तय दिन चुनिए, जब आप किसी ऐसी चीज़ को जाँचें जिस पर आप निर्भर हैं।

साथ ले जाने वाली एक बात

जो पुल हर साल दोबारा बनता है, वह कभी बूढ़ा नहीं होता।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

UNESCO
Knowledge, skills and rituals related to the annual renewal of the Q'eswachaka bridge (2013)

National Geographic
This Suspension Bridge Is Made From Grass (2018)

AFP, via Prothom Alo
Gravity-defying: revamping an Inca rope suspension bridge (2023)

PromPerú
Q'eswachaka, the hanging bridge that was started by the Incas and is still being built today (2019)

तथ्य-जाँच नोट: स्रोत मुख्य कहानी पर सहमत हैं और ब्योरों में अलग हैं। उम्र: National Geographic और PromPerú लगभग 500 साल कहते हैं; AFP लगभग 600; कहानी सिर्फ़ "सैकड़ों साल" कहती है। आकार: PromPerú 92 फ़ीट लंबाई देता है, AFP लगभग 100 फ़ीट (30 मीटर), National Geographic 120 फ़ीट; कहानी कोई लंबाई नहीं देती। समय: AFP और PromPerú जून कहते हैं (PromPerú: दूसरा हफ़्ता) और National Geographic वसंत कहता है; पेरू में जून पतझड़ का महीना है, इसलिए कहानी AFP और PromPerú को मानती है। कितनी बार: यूनेस्को, AFP और PromPerú हर साल कहते हैं; National Geographic कहता है कि पहले पुल लगभग हर तीन साल में बदला जाता था और यह सालाना आयोजन कुछ हद तक पर्यटन और सुरक्षा की वजह से बना। चार समुदायों के नाम यूनेस्को, National Geographic और PromPerú हुइंचिरी, चौपिबांडा, चोक्कायुआ और कोलाना (केहुए) बताते हैं; AFP कनास प्रांत के चार क़स्बे कहता है। "पुल बनाने के लिए सिर्फ़ आदमी नीचे उतरते हैं" स्थानीय रिवाज है जो National Geographic, AFP और PromPerú बताते हैं; वे जो कारण देते हैं वे मान्यताएँ हैं, और कहानी उन्हें नहीं दोहराती। नया पुल न बनाने पर ओले और सूखे की मान्यता PromPerú निवासियों की गवाही के रूप में बताता है; यह मान्यता है, तथ्य नहीं। "इंका लोगों का आख़िरी रस्सी का पुल" वह वर्णन है जो National Geographic और AFP इस्तेमाल करते हैं; PromPerú कहता है कि यह इकलौता इंका पुल है जो 500 साल से ज़्यादा बचा। "बिना मज़दूरी" वाला ब्योरा National Geographic का है; "बिना सुरक्षा-पट्टों के", चिल्लाहट "हाइली केस्वाचाका" और पर्यटन की कमाई AFP के हैं। रस्सी बनाने के चरण यूनेस्को और PromPerú के हैं। उद्धरण

स्मिथसोनियन के शोधकर्ता जोसे बार्रेइरो का है, National Geographic में। नक़्शे का निशान पुल के पास है। “हमारी राय” वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।